IR
Integral Research

Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal) ISSN: 3048-5991
Journal home page: https://integralresearch.in/, Vol. 02, No. 05, May. 2025

स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन

डा. प्रभात शुक्ल*
प्रोफेसर
शिक्षक शिक्षा विभाग
स्वामी शुकदेवानन्द कालेज, शाहजहाँपुर।

Abstract

स्वामी विवेकानंद एक युगदृष्टा संत, विचारक और समाज सुधारक थे, जिन्होंने भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता और शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी विचार प्रस्तुत किए। उनका शिक्षा दर्शन मानव के सर्वांगीण विकास पर केन्द्रित है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक पहलुओं का समावेश है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य में निहित दिव्यता को जागृत करना है। उन्होंने शिक्षा को चरित्र निर्माण, आत्मविश्वास, स्वावलंबन और राष्ट्रीय एकता का माध्यम माना। उनके शैक्षिक विचारों में व्यावहारिक ज्ञान, योग, नैतिक मूल्यों और भारतीय संस्कृति को प्रमुख स्थान दिया गया है। विवेकानन्द जी ने गुरु-शिष्य परंपरा को पुनर्जीवित करने पर बल दिया और शिक्षकों को आदर्श चरित्रवान बनने की प्रेरणा दी। उनके अनुसार, शिक्षण विधियाँ एकाग्रता, आत्मानुशासन और आत्मबोध पर आधारित होनी चाहिए। उन्होंने मातृभाषा, विज्ञान, कला और योग को पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग माना तथा महिला शिक्षा पर विशेष जोर दिया। स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन आज भी प्रासंगिक है और भारतीय शिक्षा प्रणाली को मानवीय मूल्यों, राष्ट्रीय चेतना और आध्यात्मिक जागृति से जोड़ने का मार्ग प्रशस्त करता है। उनके विचार न केवल भारत बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

Keywords: स्वामी विवेकानन्द, शिक्षा दर्शन, चरित्र निर्माण, गुरु-शिष्य परंपरा, योग, भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक शिक्षा।

स्वामी विवेकानन्द जी ने भारतीय परम्पराओं और अपनी मातृभूमि के लिये अपना सारा जीवन न्यौछावर कर दिया। देश तथा विदेश दोनों में उन्होंने देश भक्ति एवं मानव जाति के आध्यात्मिक और सामाजिक उत्थान के लिये महत्वपूर्ण योगदान किया है। अपने ओजस्वी विचारों के कारण ही स्वामी विवेकानन्द जी नवयुवकों के प्रेरणा स्रोत बन गये। स्वामी विवेकानन्द जी जात-पात, ऊँच-नीच के विरोधी थे। विभिन्न मतों एवं सम्प्रदायों के समन्वय के पक्ष में थे। हमारे देश में व्याप्त अज्ञानता तथा गरीबी से बहुत चिन्तित थे, जिसका मूल कारण अशिक्षा है। इसलिये उनका उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से मानव जीवन स्तर को उच्च करना था।

विवेकानन्द सन्यासी विचारक थे परन्तु उनका चिन्तन केवल धर्म पर केन्द्रित नहीं था। मनुष्य के व्यवहारिक जीवन में काम आने वाला ऐसा कोई विषय नहीं है जिस पर स्वामी विवेकानन्द जी ने व्यापक चिन्तन मनन न किया हो। मनुष्यता के उत्थान से जुड़े प्रायः सभी विषयों पर स्वामी विवेकानन्द जी ने अपना वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया

* Corresponding Author: डॉ. प्रभात शुक्ल
Email: psprabhatshukla@gmail.com
Received 22 April. 2025; Accepted 18 May. 2025. Available online: 30 May. 2025.
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License
cc BY NC

है। मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए स्वामी विवेकानन्द जी शिक्षा को सबसे ज्यादा कारगर हथियार मानते थे। उनके शिक्षा सम्बन्धी विचारों में सर्वत्र एक नई ताजगी और स्फूर्ति परिलक्षित होती है।

1. संक्षिप्त जीवन परिचय

स्वामी विवेकानन्द जी का जन्म 12 जनवरी 1863 को कलकत्ता के सिमुलिया पल्वी गांव में श्री विश्वनाथ दत्त एवं श्रीमती भुवनेश्वरी देवी के परिवार में हुआ था। इनके बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। स्वामी विवेकानन्द जी अपने जन्म से ही आध्यात्मिकता की ओर झुके हुए थे। आनुवंशिक संस्कार के बीज स्वामी विवेकानन्द जी के अन्तः में जमे हुए थे जिन्होंने अवसर पाकर अपना स्वरूप संसार पर प्रकट किया तथा आगे चलकर स्वामी विवेकानन्द जी भारत की संस्कृति एवं आध्यात्मिक चेतना के जागरण के अग्रदूत के रूप में विख्यात हुए।

विवेकानन्द जी नवीन युग के महापुरुष थे। उन्होंने धार्मिक कार्यों में पुरातन विचारधारा और आडम्बरपूर्ण पूजा के स्थान पर मानसिक पूजा को अत्यधिक महत्व दिया। उन्होंने रुढ़िवादिता को नष्ट करके जनता को धर्म के मूल तत्वों का महत्व बताया। स्वामी विवेकानन्द जी ने समाज में व्याप्त जाति-पांति, अस्पृश्यता, भेदभाव आदि विभिन्न कुरीतियों को दूर करने के लिये जीवनभर अथक प्रयास किये। स्वामी विवेकानन्द जी का जीवन आज भी सफलता की सर्वोच्च चोटी पर पहुँच कर चारों ओर ज्ञान का प्रचार प्रसार कर रहा है। स्वामी विवेकानन्द जी ने वेदान्त दर्शन की व्याख्या कर भारतीय जनमानस के लिये नवीन पथ प्रदर्शित किया। स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार पहले देश की समृद्धि आवश्यक है, उसके बाद आध्यात्मिक उन्नति। जब तक भारत के निवासियों का जीवन स्तर उच्च कोटि का नहीं हो जाता तब तक अध्यात्मिक उन्नति की बातें स्वीकार करना बेकार है। भारतवासियों की दीन-हीन दशा देखकर उनका कलेजा भयंकर पीड़ा से फटने लगता था। भारत के उद्धार के लिये उनका मन तड़पने लगता था।

विवेकानन्द जी के जीवन पर आचार्य रामकृष्ण परमहंस का अत्यधिक प्रभाव पड़ा। उनके प्रभाव के कारण नरेन्द्रनाथ दत्त आगे चलकर स्वामी विवेकानन्द बने।

2. स्वामी विवेकानन्द जी के शैक्षिक विचार

भारतीय शिक्षा-शास्त्रियों के विचार प्रकृतिवाद की बेड़ी में जकड़े नहीं है, जहाँ पर उन्होंने प्रकृति से शिक्षा लेने का उपदेश दिया है और प्राकृतिक नियमों का अनुसरण करने की सलाह दी है, वहीं प्रकृति के रचयिता की ओर भी संकेत किया है। महामना मालवीय, टैगोर, गाँधी, दयानन्द, विवेकानंद, अरविन्द आदि सभी विचारकों ने ईश्वर में आस्था प्रकट की है और प्रकृति को अन्तिम सत्य न मान कर परम सत्य को सत् चित् एवं आनन्द के रूप में देखा है, सभी ने अनेकता में एकता के दर्शन किये है और सत्यं, शिवं, सुन्दरं की उपासना में जीवन को सार्थक माना है। स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा सम्बन्धी आदर्शवादी विचारों को महत्व दिया। उनके उपदेशों में आध्यात्मिक पक्ष महत्वपूर्ण रहा है।

स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचार प्रगतिशील और प्रबुद्ध समाज को आकार देने में अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। कर्मयोग, ज्ञानयोग, भारतीय नारी, मेरा जीवन और ध्येय, राजयोग, संस्कृति और समाजवाद, शिक्षा और भक्तियोग जैसी रचनाओं के माध्यम से स्वामी विवेकानन्द जी ने शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति और राष्ट्र के समग्र विकास पर जोर

दिया। उनके विचार शिक्षक और विद्यार्थी दोनो को प्रेरित करते हैं तथा शिक्षा में सकारात्मक बदलाव को बढ़ावा देकर एक सुशिक्षित समाज के निर्माण पर बल देते हैं। स्वामी विवेकानन्द जी की शिक्षाएँ चरित्र-निर्माण, आत्म-अनुशासन और सांस्कृतिक मूल्यों के महत्व को उजागर करती हैं।

2.1 शिक्षा का स्वरूप

स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा के स्वरूप को उनके शिक्षा सम्बन्धी विचारों के आधार पर समझा जा सकता है। शिक्षा के सम्बन्ध में उन्होंने निम्न विचार दिए-

स्वामी विवेकानंद के अनुसार, 'शिक्षा का अर्थ है उस पूर्णता को व्यक्त करना जो सब मनुष्यों में पहले से विद्यमान है'।

स्वामी जी के अनुसार, 'मैं ऐसा धर्म चाहता हूँ जो हर व्याक्ति को अन्न, वस्त्र और शिक्षा देने के साथ-साथ उन्हें अपने सभी दुःख दूर करने की शक्ति प्रदान करे, हम भारतीय पहले हैं, मराठी, गुजराती, बंगाली, मद्रासी बाद में, सबको मिलकर इस देश की दरिद्रता और अज्ञानता को दूर करना है'।

स्वामी जी ने शिक्षा के स्वरूप के सन्दर्भ में कहा है कि 'हम ऐसी शिक्षा चाहते हैं जो चरित्र का निर्माण कर सके, मन की शक्ति को तटस्थ कर सके, बुद्धि का विस्तार करे तथा मानव को उसके स्वयं के पैरों पर खड़ा कर सके।'

स्वामी जी ने शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य मानव निर्माण को माना तथा मानव में अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति को वास्तविक शिक्षा माना है।

2.2 शिक्षा का उद्देश्य

स्वामी जी के अनुसार जन सामान्य की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जिससे चरित्र का विकास हो, मानसिक क्षमता बढ़े, बुद्धि का विकास हो और व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सके। शिक्षा मनुष्य को भावों तथा विचारों का आत्मसातीकरण करा सके। मानव को ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो उद्योग धन्धों को विकसित कर सके और व्यवसाय ढूढने की जरूरत न पड़े तथा मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके।

स्वामी विवेकानन्द के नव्य वेदान्त के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक में अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है; अर्थात् परमात्मा ही ज्ञान और शक्ति का स्रोत है और वह प्रत्येक बालक के भीतर सुशुप्त अवस्था में है, और उस परमात्मा को जाग्रत करना ही शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए।

स्वामी जी शिक्षा के प्रमुख उद्देश्यों में राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता दोनों को बालक में देखना चाहते थे। स्वामी जी के अनुसार शिक्षा का एक उद्देश्य राष्ट्रीय भावना और राष्ट्रीय गौरव का विकास करना है। स्वामी जी राष्ट्रीयता के सन्दर्भ में लिखते हैं, 'ऐ वीर साहस का अवसम्बन करो। गर्व से कहो, मैं भारतवासी हूँ और मेरा प्रत्येक भारतवासी भाई है। तुम चिल्लाकर कहो कि मूर्ख भारतवासी, ब्राह्मण भारतवासी, चाण्डाल भारतवासी, सभी मेरे भाई हैं।'

स्वामी जी ने शिक्षा के निम्नलिखित महत्वपूर्ण उद्देश्य बताए-

1. अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति
2. मानव निर्माण

3. शारीरिक पूर्णता एवं स्वास्थ्य
4. चरित्र निर्माण
5. जीवन संघर्ष की तैयारी
6. धर्मनिरपेक्ष एवं समावेशी शिक्षा
7. राष्ट्रीयता की भावना का विकास
8. आध्यात्मिक जागृति

2.3 शिक्षा का पाठ्यक्रम

स्वामी जी एक शिक्षाशास्त्री की भांति शिक्षा के पाठ्यक्रम के विषय में विचार नहीं दिए परन्तु उनके विचारों पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि उनके अनुसार पाठ्यक्रम नकारात्मक नहीं होना चाहिए। विद्यार्थियों के समक्ष सदैव सकारात्मक विचार रखे जाने चाहिए। स्वामी जी के अनुसार पाठ्यक्रम में निम्न तत्व शामिल होने चाहिए-

1. वेदांत और भारतीय दर्शन के साथ ध्यान, योग और नैतिक मूल्यों को शामिल किया जाए।
2. व्यावहारिक ज्ञान के अन्तर्गत विज्ञान, प्रोद्योगिकी, कृषि, उद्योग तथा जीवन कौशलों को पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाए।
3. उत्तम स्वाथ्य हेतु योगासन, प्राणायाम, खेलकूद, शारीरिक व्यायाम एवं स्वाथ्य शिक्षा को सम्मिलित किया जाए।
4. भारतीय संस्कृति, इतिहास, संगीत, कला, साहित्य के साथ विश्व की विभिन्न संस्कृतियों की शिक्षा प्रदान की जाए।
5. मातृभाषा तथा स्थानीय भाषा को बढ़ावा देते हुए संस्कृत, अंग्रेजी तथा अन्य आधुनिक भाषाएं भी सिखाई जाएं।
6. महिलाओं हेतु गृह विज्ञान, बाल विकास, आत्मरक्षा और स्वावलंबन आधारित विशेष पाठ्यक्रम तैयार किया जाए।
7. समाज सेवा, आपदा प्रबंधन तथा पर्यावरण संरक्षण की शिक्षा को पाठ्यक्रम शामिल किया जाए।
8. व्यक्तित्व विकास तथा सभी वर्गों के लिए समान शिक्षा का प्रावधान किया जाए।

2.4 शिक्षक-शिष्य सम्बन्ध

स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार शिक्षक का व्यक्तित्व आदर्शवादी होना चाहिए तथा उसका चरित्र भी अग्नि के समान प्रकाशयमान होना चाहिए। उसे बालक को ज्ञान दान स्वरूप देना चाहिए। ज्ञान का दान बिना त्याग किये नहीं हो सकता अतः शिक्षक को त्याग की प्रतिमूर्ति होनी चाहिए। शिक्षा ग्रहण करने के लिए शिष्य के हृदय में भी शिक्षक के प्रति श्रद्धा का भाव होना चाहिए।

शिक्षक-शिष्य सम्बन्ध के विषय में स्वामी विवेकानन्द जी कहते हैं, 'शिक्षक के प्रति श्रद्धा, समर्पण, विनम्रता तथा आदर की भावना के बिना हमारे जीवन में कोई विकास नहीं हो सकता। जिन देशों में शिक्षक-शिक्षार्थी सम्बन्धों

की उपेक्षा की गयी है, वहाँ शिक्षक केवल एक व्याख्याता बनकर रह गया है। वहाँ शिक्षक अपने लिए पाँच डालर की आशा करने वाले और शिक्षक व्याख्यान को अपने मस्तिष्क में भरने वाले रह जाते हैं। इतना कार्य सम्पन्न होने के पश्चात दोनो अपने राह पर चल देते हैं।'

स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार शिक्षक तथा शिष्य दोनो के प्रेम में निजी लोभ तथा स्वार्थ का कोई स्थान नहीं होना चाहिए।

2.5 शिक्षण विधि

स्वामी विवेकानन्द जी प्रभावी शिक्षण हेतु एकाग्रता को महत्वपूर्ण स्थान देते थे। उनके अनुसार 'एकाग्रता' ज्ञान प्राप्ति का एकल मार्ग है। स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार 'एकाग्रता के माध्यम से अभिघात की शक्ति और बल आता है। मानव मस्तिष्क की शक्ति की कोई सीमा नहीं है। अधिक शक्ति एक बिन्दु पर धारण करने के लिए होती है, यही अधिक सकाग्रचित्तता है, यही रहस्य है।' स्वामी विवेकानन्द जी आत्मज्ञान के माध्यम से आत्मा की पूर्णता में विश्वास करते थे। स्वामी विवेकानन्द जी ने योग विधि (कर्म योग, भक्ति योग तथा ज्ञान योग आदि) को शिक्षा का महत्वपूर्ण साधन माना तथा इसका लक्ष्य मन का एकीकरण बताया। विवेकानन्द जी ने गुरुकुल परंपरा को पुनर्जीवित करने पर बल दिया। उन्होंने विद्यार्थियों हेतु व्यक्तिगत मार्गदर्शन तथा परामर्श को शिक्षण का आवश्यक अंग माना।

3. निष्कर्ष

स्वामी विवेकानन्द जी का शैक्षिक दर्शन आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली हेतु मार्गदर्शक है। स्वामी विवेकानन्द जी शिक्षा को मानव निर्माण का साधन मानते थे तथा व्यक्ति के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास हेतु शिक्षा को एक सशक्त माध्यम के रूप में स्वीकार करते थे। स्वामी विवेकानन्द जी ने ऐसी शिक्षा प्रणाली की कल्पना की जो व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास को समग्र रूप से निर्देशित कर सके।

वर्तमान भारतीय सन्दर्भ में यदि स्वामी विवेकानन्द जी द्वारा प्रतिपादित नव्य वेदांत दर्शन की शिक्षा व्यवस्था एवं विचारों का अनुशीलन करें तो हमारी शिक्षा प्रक्रिया में सकारात्मक परिवर्तन होने के साथ साथ सामाजिक क्रियाकलापों में भी नवीनता, मौलिकता, सौन्दर्यानुभूति एवं समरसता का प्रदुर्भाव होगा। स्वामी विवेकानन्द जी के मानवतावादी शैक्षिक विचारों का अनुसरण करके भारतवासी पुनः विश्वगुरु अपनी प्रतिष्ठा एवं मर्यादा को पा सकेंगे।

4. सन्दर्भ ग्रन्थ

1. पारासर, डा. मधु एवं अग्रवाल, रिंकी (2021). *शिक्षा चिंतन एवं व्यवहार.* आगराः एस बी पी डी पब्लिशर्स।

2. पंडित, सविता (2024). *स्वामी विवेकानन्दः एक महान योगी.* कर्नाटकः टू साइन पब्लिशिंग हाउस।

3. रुवाली, डा. नीरज एवं शर्मा, मोहित कुमार (2024). *गाँधी और विवेकानन्द का दार्शनिक चिन्तन एवं उसके विविध आयाम.* आगराः श्री विनायक पब्लिकेशन।

Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal) ISSN: 3048-5991
Journal home page: https://integralresearch.in/, Vol. 02, No. 05, May. 2025

4. शर्मा, महेश (2014). *स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन.* प्रभात प्रकाशन।
5. शर्मा, डा. नमिता एवं शर्मा, पल्लवी (2022). *शिक्षा के दार्शनिक, समाजशास्त्रीय, राजनीतिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य.* आगराः एस बी पी डी पब्लिशर्स।